PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

जून 2006 ISSUE 0606 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

केवल अपने प्रभु-ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी शक्ति से प्यार करो

प्रभु–ईश्वर ने मूसा नबी के द्वारा अपनी प्रजा को नियम, आदेश और विधि–निषेध सिखाये थे और हर समय पालन करते रहने को कहा था– जिससे उनकी आयु लम्बी हो, उनका कल्याण हो, वे समृद्ध हों और ईश्वर का आशीर्वाद प्रचुर मात्रा में प्राप्त कर सकें। प्रभु ने अपनी प्रजा से यह कहा था, ***"तुम्हारा प्रभु-ईश्वर एकमात्र प्रभु है। तुम अपने प्रभु-ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी शक्ति से प्यार करो।*** जो शब्द मैं आज तुम्हें सुना रहा हूँ, वे तुम्हारे हृदय पर अंकित रहें। तुम अपने पुत्रों को अच्छी तरह सिखाओ। घर में बैठते या राह चलते, शाम को लेटते या सुबह उठते समय, उनकी चरचा किया करो।"

(पढ़े विधि-विवरण 4:1-8)

"तुम अपने प्रभु–ईश्वर पर श्रद्धा रखोगे, उसी की सेवा करोगे और उसकी के नाम पर शपथ खाओगे। तुम पराये देवताओं के अनुयायी मत बनो–उन राष्ट्रों के देवताओं के, जो तुम्हारे आस पास रहते हैं, क्योंकि तुम्हारे बीच रहने वाला तुम्हारा प्रभु–ईश्वर एक असहनशील ईश्वर है। ऐसा न हो कि उसका क्रोध तुम पर भड़क उठे और वह देश की भूमि पर से तुम को मिटा दे।"

(विधि-विवरण 6:13-15)

इस तरह जिन लोगों ने अन्य देवताओं की पूजा की, वे ईश्वर के कोप के भाजन बने, विनाश के गर्त में गिरे और उपहास के पात्र बने। पर यह अन्य देवता किधर से आये? ईश्वर का मुकाबला कौन कर सकता है भला? इसका उत्तर भी हमें स्वंय पवित्र बाईबिल देती है। केवल यही नहीं, प्रकृति की या सृष्टि की पूजा (देवमूर्ति मनुष्य की सृष्टि है पर संसार ईश्वर की सृष्टि है) के विषय में भी हम प्रज्ञा–ग्रन्थ में पढ़ते हैं जिसमें मनुष्य का पाप यह है कि उसने सृष्टि की सुन्दरता, शक्ति, महानता व क्रियाशीलता को देखकर भी उसके आधार पर सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान्, सृष्टिकर्ता को पहचान न सके।

प्रकृति की पूजा :

वे मनुष्य कितने मूर्ख हैं, जिन में ईश्वर का ज्ञान नहीं है ! जो दृश्य जगत् को देखकर 'सत्' नामक ईश्वर को नहीं जान सके, जो सृष्टि को देख कर सृष्टिकर्ता को पहचानने में असमर्थ रहे! किन्तु उन्होंने अग्नि, पवन, सूक्ष्म वायु, तारामण्डल, जल का तीव्र प्रवाह अथवा आकाश के ज्योति–पिण्डों को संसार का संचालन करने वाले देवता समझा है।

यदि उन्होंने इन वस्तुओं के सौन्दर्य से मोहित हो कर इन्हें देवता समझ लिया है, तो वे जान जायें कि इन सब का स्वामी इन से कितना श्रेष्ठ है; क्योंकि समस्त सौन्दर्य के मूलस्रोत द्वारा इनकी सृष्टि हुई है और यदि वे इन वस्तुओं की शक्ति और क्रियाशीलता से प्रभावित हुए, तो वे इन वस्तुओं क अनुमान लगायें कि इनका निर्माता कितना अधिक शक्तिशाली है; क्योंकि सृष्ट वस्तुओं की महानता और सौन्दर्य के आधार पर इनके निर्माता का अनुमान लगाया जा सकता है।

किन्तु उन लोगों का दोष बड़ा नहीं है; क्योंकि वे ईश्वर को ढूँढते और उसे पाने के इच्छुक थे, किन्तु वे भटक गये। वे ईश्वर के कार्यों के बीच जीवन बिता कर उनकी छानबीन करते और दृश्य वस्तुओं के सौन्दर्य के कारण भ्रम में फँस जाते हैं।

फिर भी वे लोग क्षम्य नहीं हैं; क्योंकि यदि वे ज्ञान में इतना आगे बढ़ गये थे कि विश्व के विषय में चिन्तन कर सके, तो वे शीघ्र ही इसके स्वामी को क्यों नहीं पहचान सके?"

(प्रज्ञा 13:1-8)

शान्ति की रानी, माँ मरियम से संसार की शान्ति के लिए एक प्रार्थना

हे निर्मल,निष्कलंक हृदय रखने वाली माँ! तू संसार की शान्ति के लिए आँसू बहाती है; अपने पापी व अज्ञानी बच्चों की मृत्यु पर शोक मनाती है व उनकी आत्मा की मुक्ति के लिए अपने पुत्र प्रभु येशु मध्यस्थ करती है। हम तुझसे विनम्र याचना करते हैं कि तू, हे कृपाओं की माता! अपने पुत्र व शान्ति के राजा से इस पीड़ित, आतंकित, व्याकुल व शोक भरे संसार के लिए शान्ति का वरदान माँग ले, जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय में, परिवार में, राष्ट्र में अपना निवास बना ले और इस धरती को एक नया, सुन्दर व सुस्थिर रुप प्रदान करे। सभी तेरे पुत्र द्वारा प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा से भरपूर हों जिससे इस संसार में शान्ति, अनुशासन, न्याय, एकता व प्रेम कायम रहे, सभी ईश्वर की प्रिय सन्तान बनें व दूसरों की निःस्वार्थ सेवा और सहायता करने के लिए सदा तत्पर रहें। आमेन।

मूर्ति पूजा का प्रारम्भ मनुष्य की कल्पना से प्रारम्भ हुआ। उसकी ईश्वर को पाने व सृष्टि को काबू में रखने की जिज्ञासा ने, उसके अहंभाव व स्वार्थ ने, उसे अन्धकार व पाप के मार्ग पर अग्रसर कर दिया जाससे वह दुःखी व निराश हो गया तथा अपने विनाश का कारण खुद बन गया। आइए, हम पढ़ें की मूर्तियों की उत्पत्ति कैसे हुई और इसका क्या परिणाम हुआ।

देवमूर्तियों की उत्पत्ति :

मूर्तियों की कल्पना से धर्मत्याग प्रारम्भ हुआ और उनके निर्माण ने जीवन को भ्रष्ट कर दिया; क्योंकि वे न तो आदि में विद्यमान थीं और न सदा बनी रहेंगी। मनुष्यों की व्यर्थ कल्पना के कारण उनका पृथ्वी पर आगमन हुआ था और इसलिए उनका आकस्मिक अन्त निश्चित

"कोई मेरे पास तब तक नहीं आ सकता, जब तक कि पिता, जिसने मुझे भेजा, उसे आकर्षित नहीं करता। मैं उसे अन्तिम दिन पुनर्जीवित कर दूँगा।" (योहन 6:44)

किया गया है। अप्रत्याशित शोक से दुःखी होकर किसी पिता ने अपने बच्चे की मूर्ति बनवायी, जिसकी असमय में मृत्यु हो गयी थी। जो बच्चा मनुष्य के रुप में मर गया था, वह उसे अब देवता का आदर देने और अपने अधीन लोगों द्वारा पूजा–पाठ कराने लगा। इसके बाद इस दुष्ट प्रथा को बल मिला उसका विधिवत् पालन होने लगा और शासकों के आदेश पर गढ़ी मूर्तियों की पूजा होती रही लोग राजाओं को अपने सामने आदर नहीं दे सकते थे, क्योंकि वे उन से दूर रहा करते थे। इसलिए उन्होंने दूरवर्ती आकृति का प्रति रुप बना कर समादृत राजा की प्रत्यक्ष मूर्ति की रचना की, जिससे वे अपने उत्साह से अनुपस्थित की चापलूसी कर सकें, मानों वह विद्यमान हो। जो लोग राजा को नहीं जानते थे, वे भी कलाकार के अपूर्व उत्साह से प्रेरित होकर मूर्ति की पूजा में सम्मिलित हो जाते थे, क्योंकि कलाकार ने शासक का कृपापात्र बनने के उद्देश्य से अपने कौशल से मूर्ति को वास्तविकता से सुन्दर बनाया था। भीड़ ने मूर्ति के सौन्दर्य से मोहित होकर उसे, जो पहले समादृत मनुष्य था, अपनी आराधना का विषय बनाया। इस प्रकार यह प्रथा मानव जीवन के लिए फन्दा बन गयी, क्योंकि मनुष्यों ने चाहे अपने दुर्भाग्य से या शासकों के दबाव से, पत्थर या लकड़ी के टुकड़ों को वही नाम दिया, जो किसी दूसरे को नहीं दिया जा सकता है।"

मूर्तिपूजा का परिणाम :

"वे न केवल ईश्वर के ज्ञान के विषय में भटक गये, बल्कि वे अपने अज्ञान के कारण जो घोर संघर्ष का जीवन बिताते हैं, अपनी उस दयनीय दशा को शान्ति का नाम देते हैं। वे अपने पुत्रों की बलि चढ़ाते, रहस्यानुष्ठान मनाते और रंगरलियों के साथ दावतें उड़ाते है वे न तो जीवन का आदर करते और न विवाह की पवित्रता का। वे षड्यन्त्र रच कर एक दूसरे का वध करते और व्यभिचार द्वारा एक दूसरे को दुःख देते हैं। चारों ओर **अव्यवस्था** है : **रक्त और वध, चोरी और छलकपट, प्रलोभन और बेईमानी, दंगा और झूठी शपथ, मूल्यों का विघटन, परोपकार की कृतध्नता, आत्माओं का दूषण, अप्राकृतिक संसर्ग, विवाह का व्यतिक्रम और लम्पटता :** क्योंकि घृणित **देवमूर्तियों की पूजा सभी बुराईयों का प्रारम्भ, कारण और पराकाष्ठा** है। मूर्तिपूजक या तो आनन्दातिरेक में पागल हो जाते, या झूठी भविष्यवाणी करते, या अन्याय की कमाई खाते हैं, या झूठी शपथ खाने में संकोच हीं करते। वे निर्जीव देवमूर्तियों पर भरोसा रखते हैं, इसलिए उन्हें अपनी झूठी शपथों के कारण किसी अनर्थ की आंशका नहीं है।

किन्तु उन्हें दोहरा दण्ड दिया जायेगा क्योकि उन्होंने देवमूर्तियों के अनुयायी बनने के कारण ईश्वर के विषय में भ्रान्तिपूर्ण विचार रचा और पवित्रता की उपेक्षा करते हुए कपट से झूठी शपथ खायी।" **(प्रज्ञा 14:12-30)**

"हाथ से बनी हुई वस्तु अभिशप्त है, मूर्ति भी और बनाने वाला भी, क्योंकि उसने उसे बनाया और मूर्ति नश्वर होते हुए भी ईश्वर कहलाती है! ईश्वर को दुष्ट और उसकी दुष्टता, दोनों से समान रुप से घृणा है। कृति को और कृतिकार को, दोनों को दण्ड दिया जायेगा। इसलिए राष्ट्रों की देवमूर्तियों को दण्ड दिया जायेगा। क्योंकि वे ईश्वर की सृष्टि में घृणा के पात्र, मनुष्यों की आत्माओं के लिए पाप का कारण और मूर्खों के पैरों के लिए फन्दे बन गयी हैं।"
(प्रज्ञा 14:8-11)

जिन लोगों ने इसके अतिरिक्त मृतक वस्तुओं की नहीं, बल्कि पशुओं व पक्षियों की पूजा की उन्हें भी ईश्वर उनके अधर्म के कारण उन्हीं पशुओं या पक्षियों द्वारा दण्ड दिया है क्योंकि उन्हीं के कारण उन लोगों ने ईश्वर की, सृष्टिकर्ता की पूजा नहीं की, बल्कि तिरस्कार किया। दण्ड मिलने के कारण कुछ लोग सच्चे ईश्वर को पहचान गये, उपहास के पात्र बन जाने के कारण उनकी आँखें, उनकी बुद्धि खुल गई।**(पढ़ें प्रज्ञा12:24-27)** पर जो कठोर दिल व घमण्डी बने रहे, नासमझ बने रहे, वे उन पशुओं समान बनने लगे या उनके द्वारा मारे गये।

"उनके अधर्म के मूर्ख विचारों के दण्ड स्वरुप, जिनसे प्रेरित होकर वे भटक कर गूँगे साँपों और तुच्छ पशुओं की पूजा करते थे, तूने उनके यहाँ गूँगे पशुओं को भारी सँख्या में भेज दिया, जिससे व समझें कि कोई जिसके द्वारा पाप करता है, उसी के द्वारा उसे यन्त्रणा दी जाती है।" **(प्रज्ञा 11:15-16)**

जो सच्चे ईश्वर को पहचान जाते हैं, वे ऐसी कल्पनाओं या कृतियों या रंग बिरंगे चित्रों द्वारा, पशुओं या सृष्टि के वस्तुओं व तत्वों द्वारा भटके नहीं, क्योंकि वे जान गये कि सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञानी कौन है। और इसलिए वे पाप व बुराई करने से डरते हैं, जीवन का आदर करते तथा पवित्रता की ओर बढ़ते हैं। वे ईश्वर की संहिता व आज्ञाओं का पालन कर, उसकी आराधना करते हैं, उसे ही दिल मे प्रथम स्थान देते हैं। वे जीवन में सफलता प्राप्त करते व अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं क्योंकि स्वंय ईश्वर उनकी सहायता करता व साथ देता है।

"हम पाप नहीं करेंगे, क्योंकि हम तेरे कहलाते हैं। तेरा ज्ञान हमें पूर्ण धार्मिकता तक पहुँचाता है और तेरे सामर्थ्य की पहचान अमरत्व की जड़ है।" **(प्रज्ञा 15:2-3)**

केवल मूर्ख व्यक्ति ईश्वर को, जो अदृश्य है, पहचान नहीं पाता, पर दृश्य वस्तुओं को देख उसके मन में आशा उत्पन्न होती है, एक मृत मूर्ति या चित्रकारों की व्यर्थ कृति पर वह मुग्ध होता है। वह उसकी पूजा करता है और बुराई का अनुयायी बन जाता है।

उनके कार्यों की निरर्थता के विषय में हम यह तथ्य जान लें की **क)** वह भी मिट्टी से जन्मा है और उसके जीवन की समाप्ति पर उसे वापिस मिट्टी में ही लौटना है; **ख)** वह न तो खुद अपने जीवन की रक्षा कर सकता और न किसी के अन्दर जीवनदायक प्राण फूँक सकता है; **ग)** वह अपनी कृतियों से श्रेष्ठ है क्योंकि उनमें जीवन नहीं है न वह बोलती या सुनती या चलती या साँस लेती है; **घ)** मनुष्य दृष्टता के कारण वध कर सकता है किन्तु वह न तो छूटे हुए प्राणों को वापस लाने में समर्थ है और न अधोलोक में बन्द आत्मा का उद्धार करने में; **ड)** वह और उसकी कृति दोनो घृणित हैं और दण्ड के योग्य हैं, क्योंकि वह दूसरों को मुग्ध करने या भटकाने के कारण उनकी आत्माओं के लिए पाप का कारण बन गया है; **च)** वह अपने–जैसे कोई देवता बनाने में असमर्थ है–मृत्यु होने के कारण वह अपने अपवित्र हाथों से वही बना सकता है, जो मृत है।"
(पढ़ें प्रज्ञा 15:6-19)

प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा को प्राप्त करें!

प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को अपने अन्तिम समय निकट आने से पहले ढारस बँधाया और उन्हें यह विश्वास दिलाया था कि जो कुछ भी वे उनके नाम से प्रार्थना में माँगेंगे, वह उन्हे वही प्रदान करेंगे। साथ ही उन्हें यह बताया कि उनके थोड़े समय तक उनसे दूर रहने के बाद वह हमेशा उनके साथ रहेंगे। वह पिता के पास जाकर उनके लिए स्वर्ग में स्थान का प्रबन्ध करेंगे और उनकी सहायता के लिए एक सहायक भी भेजेंगे। वह सहायक ईश्वर का सत्य का आत्मा, पवित्र आत्मा है, जो सदा उनके साथ रहेगा, लेकिन जो यह अंधकारमय संसार ग्रहण नहीं कर पायेगा।

प्रभु येशु ने कहा, **"वह सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम पर भेजेगा, तुम्हे सबकुछ समझा देगा। मैंने तुम्हें जो कुछ बताया, वह उसका स्मरण दिलायेगा।"**
(पढ़ें योहन 14)

"...वह मेरे विषय में साक्ष्य देगा और पाप, धार्मिकता और दण्डाज्ञा के विषय में संसार का भ्रम प्रमाणित कर देगा। वह सत्य का आत्मा तुम्हें पूर्ण सत्य तक ले जायेगा क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, बल्कि वह जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आने वाली बातों के विषय में बतायेगा। वह मुझे महिमान्वित करेगा क्योंकि उसे मेरी ओर से जो कुछ मिला है, वही तुम्हें बतायेगा।
(योहन 16:7-15)

"मैं उन दिनों अपने दास-दासियों पर अपना आत्मा उतारुँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे। मैं ऊपर आकाश में चमत्कार दिखाऊँगा और नीचे पृथ्वी पर चिन्ह प्रकट करुँगा, अर्थात् रक्त, अग्नि और उड़ता हुआ धुँआ।"(प्रेरित चरित 2:18-19)

इस तरह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का आपसी सम्बन्ध जानकर हमें **पवित्र त्रित्व** की एकता नज़र आती है– तीन व्यक्ति पर एक ही स्वभाव। पिता और पुत्र से पवित्र आत्मा विसर्जित होता है जिसकी हम सभी को सख्त ज़रुरत है। इस माह पवित्र त्रित्व का (11 तारीख) तथा पेन्तेकोस्त का पर्व (4 तारीख) कलीसिया ने मनाया जब प्रभु ने अपने पुनरुत्थान के 50 दिन (पेन्ते अर्थात्– पाँच) बाद अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और पवित्र आत्मा सभी प्रेरितों पर उतरा था। प्रेरित पेत्रुस ने निडर होकर ऐसा प्रभवाशाली भाषण दिया कि सभी ने पश्चाताप कर बपतिस्मा ग्रहण किया। यह दिन कलीसिया का जन्मदिन बना। इसी दिन 3000 विश्वासी समुदाय में जुड़ गये। **(प्रेरित-चरित 2)**

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

प्रभु मेरा रक्षक एवं मुक्तिदाता है!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, बसन्त सिंह (उम्र–35 वर्ष), अपने ज़ख्मी पैर के कारण चलने में बिल्कुल असमर्थ था और जाँच करवाने के बाद डॉक्टर ने (दिल्ली में) पैर काटने को भी कह दिया था। मैं बिस्तर पर लेटा रहता था। 13 वर्ष पहले मेरा पैर जल गया था और तब से मेरे पैरों की चलने की शक्ति बहुत कम हो गई। पहले बिहार में आस–पास के अस्पताल दिखाया। जाँच के बाद डॉक्टर ने पूरी दायीं टाँग काटने को कहा था। यह मैं नहीं कर सकता था क्योंकि मैं अपाहिज बन कर न तो अपना ख्याल रख पाता, न अपने परिवार का। मैं वापिस बिहार चला गया। पटना में एक अस्पताल में 6 महीने इलाज चला। मजबूरन अपने पैर का अगूँठा मुझे कटवाना पड़ा। इलाज पर करीब 3-4 लाख रुपये खर्च कर दिये जिसके लिए मुझे अपनी ज़मीन तक बेचनी पड़ी। इलाज करने पर भी मेरी हालत ज्यादा नहीं सुधरी।

गाँव (परिहरी, जहानाबाद) में एक पड़ोसी ने मेरी यह दशा देख मुझे यहाँ फरीदाबाद में "जीवन–धाम" में चल रही रोग शान्ति प्रार्थना में विश्वास के साथ भाग लेने को कहा। मेरा दायाँ पैर सूज कर मोटा हो गया था और चलना मेरे लिए बहुत दर्दनाक था। प्रभु की कृपा से जब से मैं यहाँ इतवार की प्रार्थना में भाग लेने लगा मेरे घाव भरने लगे। धीरे–धीरे मेरे पैर का दर्द खत्म हो गया। बहन जी को पवित्र दर्शन में भी यह मेरे लिया बताया था कि प्रभु एक ऐसे व्यक्ति को आशीष दे रहे हैं जिसका पैर काटने को कहा गया है। पर उसका पैर कटने से प्रभु बचा रहे हैं। अब 6 महीने के बाद, मैं प्रैस करने का काम करता हूँ, जूते भी पहन लेता हूँ, कहीं भी चल लेता हूँ और मेरे पैरों में सूजन भी नहीं है। केवल प्रभु येशु की दया व उनका प्रेम ही है जिसके कारण मुझे एक नया जीवन मिला। आल्लेलूया।

बसन्त सिंह, फरीदाबाद

तब प्रभु अर्द्धांगरोगी से बोले, "उठो और अपनी खाट उठा कर घर जाओ।" और वह उठ कर अपने घर चला गया। यह देख कर लोगों पर भय छा गया और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। (मत्ती 9:6-8)

10 साल पुरानी एक्ज़ीमा बीमारी से मुक्ति मिली

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

10 वर्ष पहले जब मैं एक कम्पनी में काम कर रहा था तो खुजली पैरों पर अधिक होने से मैंने खुजलाने के लिए लोहे के ब्लेड का इस्तेमाल किया। बाद मैं एक डॉक्टर को भी

दिखाया और दवा लेने से आराम मिल गया था। लेकिन कुछ दिनों में ही खुजली पैरों में फिर से शुरु हो गई। केमिस्ट से खरीदी एक ट्यूब मैं पैरों पर लगाता था। लेकिन उससे कोई स्थायी आराम नहीं मिला। डॉक्टर ने एक्ज़ीमा की बीमारी बताई। सभी जगह इलाज करवाकर देख लिया और सब जगह से मुझे निराशा ही हाथ लगी। पैरों में खुजलाने से खून आता रहता था।

इस वर्ष मई के महीने में एक दिन किसी लड़के ने मेरी हालत देख कर मुझे "जीवन–धाम" का पता दिया और चंगाई पाने के लिए प्रार्थना में शामिल होने की सलाह दी। मैं इधर 14 मई को पहली बार आया और प्रभु पर विश्वास कर यह माना कि यदि मैं ठीक हो जाँऊगा तो अवश्य ही यहाँ आकर गवाही दूँगा। बहनजी ने मुझे तेल लाने के लिए कहा पर मैंने सोचा कि प्रभु यदि चाहे तो बिना तेल के भी मुझे चंगा कर देंगे। मैं जब गाँव गया तो वहीं पर ही प्रभु ने मेरे पैरों को चंगा कर मेरे घावों को भर दिया। अब मेरा चर्म रोग पूर्ण रुप से ठीक हो चुका है– प्रभु येशु की कृपा व वचन द्वारा। साथ ही घर में भी प्रभु की रोज आराधना करने से मेरे परिवार को शान्ति व सभी पैशाचिक शक्तियों से मुक्ति मिली है। गाँव में मेरे पिताजी, जो दो महीने से बुखार में बिस्तर पर पड़े हुए थे, वो भी हमारी प्रार्थना से स्वस्थ हो गये हैं। प्रभु येशु को इन सभी कृपाओं के लिए, हमारी प्रार्थना स्वीकार करने के लिए, मैं बार–बार धन्यवाद देता हूँ।

राज किशोर, (उम्र-27 वर्ष), फरीदाबाद

"प्रभु दुःखियों से दूर नहीं है। जिनका मन टूट गया है, प्रभु उन्हें सँभालता है।" (स्तोत्र 34:19)

6-मासीय/181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

पिछले माह हमने आपको मई माह का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। अब प्रस्तुत है **जून के महीने का पाठ्यक्रमः**

तारीख	वचन	तारीख	वचन	तारीख	वचन
1	इब्रानियों7-8	12	1 योहन1	23	प्रकाशना7-8
2	इब्रानियों9-10	13	1 योहन2	24	प्रकाशना9-10
3	इब्रानियों11-12	14	1 योहन3	25	प्रकाशना11-12
4	इब्रानियों13	15	1 योहन4	26	प्रकाशना13-14
5	याकूब1-2	16	1 योहन5	27	प्रकाशना15-16
6	याकूब3-4	17	2 योहन	28	प्रकाशना17-18
7	याकूब5	18	3 योहन	29	प्रकाशना19-20
8	1 पेत्रुस1-2	19	यूदस	30	प्रकाशना21-22
9	1 पेत्रुस3-4	20	प्रकाशना1-2	इसके साथ ही6-मासीय पाठ्यक्रम समाप्त हो रहा है।	
10	1 पेत्रुस5/2 पेत्रुस1	21	प्रकाशना3-4		
11	2 पेत्रुस2-3	22	प्रकाशना5-6		

जीवन-धाम, फरीदाबाद कैसे पहुँचें :
(प्रार्थना का समय : हर इतवार 9:30 से 1:00 बजे तक)

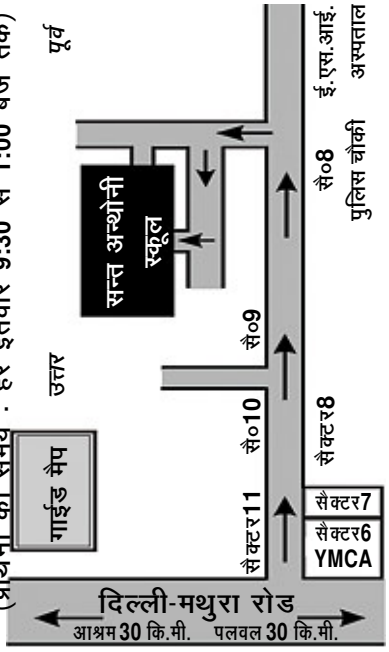

"आपका शत्रु, शैतान, दहाड़ते हुए सिंह की तरह विचरता है और ढूँढता रहता है कि किसे फाड़ खाये। आप विश्वास में दृढ़ होकर उसका सामना करें।" (1 पेत्रुस 5:8-9)

छठी मंजिल से गिरकर भी जीवित बचा! सचमुच एक अदभुत चमत्कार!

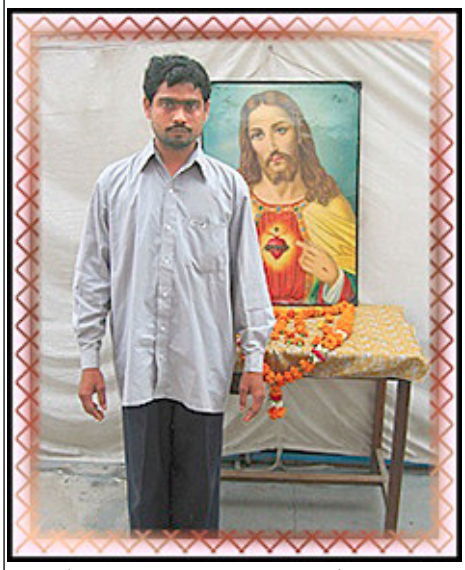

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, उदय चंद (उम्र–27 वर्ष), इस वर्ष29 मार्च को गाज़ियाबाद इन्दिरापुरम में एक 15वीं मंजिल इमारत के छँठवे मंजिल पर बाहर से प्लस्तर करते समय नीचे गिर गया। हाथ मैं पकडी करनी से मेरा चेहरा कट गया। मेरे सहकर्मियों ने मुझे गिरने पर बेहोश पाया। वह मुझे निकटवर्ती अस्पताल में ले गये जहाँ मैं चार दिन बेहोश ही रहा। पाँचवें दिन एक अमरीकी डॉक्टर की दवा से मुझे होश आया।पर तब तक मेरे शरीर के सभी अंगों की जाँच पड़ताल डॉक्टर कर चुके थे।

इस दौरान मेरी पत्नी, जो प्रभु येशु पर विश्वास करती थी, मेरे लिए प्रभु से यही दुआ की कि मेरी एक भी हड्डी न टूटे और यदि मैं बच जाँऊ तो वह अवश्य "जीवन–धाम" में जाकर गवाही देगी–ऐसा उसने माना था। मेरी पत्नी की प्रार्थना वाकई में ही प्रभु ने स्वीकार कर ली। न तो मेरी कोई हड्डी टूटी और न ही मैं बिस्तर पर पड़ा रहा। पर थोडी चोटें आईं थीं और गर्दन हिलाने में दिक्कत होती थी जिसके लिए डॉक्टर ने दो महीने तक गर्दन पर कॉलर लगाये रखने को कहा था। कुछ दिन पहले डॉक्टर ने और45 दिनों तक कॉलर लगाये रखने को कहा था। पर आज पहली बार उस दुर्घटना के बाद मैं यहाँ "जीवन–धाम" में आया तो कॉलर घर पर ही छोड आया। अब मुझे गर्दन भी हिलाने में कोई दिक्कत नहीं है। मेरे पास प्रभु को धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं। उसे अनन्तकाल तक स्तुति, आराधना व महिमा मिलती रहे।

उदय चन्द, गाज़ियाबाद

"वह मेरा नाम जानता है, इसलिए मैं उसकी रक्षा करुँगा।" (स्तोत्र 91:14)

एक अनोखा चमत्कार-नपुंसक लड़का बना!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, शीला (उम्र–30 वर्ष), अपने बच्चे शिवम के लिए बचपन से ही बहुत चिन्तित थी। कारण यह था कि उसके लिंग पर अंग विकसित नहीं हुआ था। पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने भी यह देखकर माना की उसे ऑपरेशन की ज़रुरत पडेगी। पर मैं डर के मारे किसी डॉक्टर के पास उसे नहीं ले गई। किसी दिन मुझे एक बहन ने "जीवन–धाम" में चल रही रोग चंगाई प्रार्थना के विषय में बताया और मुझे विश्वास दिलाया। अब मुझे यहाँ आते हुऐ दो साल हो चुके हैं। कुछ दिन पहले एक रात को मेरे बेटे ने देखा की उसका अंग विकसित हो चुका है। अब उसे न ऑपरेशन की जरुरत है और न किसी डॉक्टर को दिखाने की। प्रभु को इस अमूल्य कृपा के लिए लाखो बार धन्यवाद! **शीला, शिवम (उम्र-9 वर्ष), फरीदाबाद**

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) मारकुस रचित सुसमाचार
a) अध्याय 1-3

प्रस्तुत प्रश्न **सन्त लूकस** के सुसमाचार के अध्याय **1 से 3** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से (**क, ख, ग और घ**) चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाली वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) एलीज़बेथ ने ऊँचे स्वर से मरियम को धन्य क्यों कहा?
क) मरियम प्रभु येशु की माँ बनने वाली थी
ख) मरियम एलीज़बेथ की सेवा करने आई थी
ग) एलीज़बेथ के गर्भ का बच्चा उछल पड़ा था
घ) मरियम ने प्रभु की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया था

2) लूकस के अनुसार ईसा से दाऊद तक और दाऊद से आदम की कितनी पीढियाँ थीं?
क) 40, 36 ख) 42, 34 ग) 43,35 घ) 42,33

3) इनमें से किन व्यक्तियों ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो कर भविष्यवाणी की थी?
क) अन्नस ख) अन्ना ग) सिमेयोन घ) ज़करियस

4) अग्रदूत योहन ने इनमें से किन लोगों को उपदेश दिये?
क) फरीसी ख) बच्चे ग) सैनिक घ) नाकेदार

5) ज़करियस किसके दल का याजक था और उसकी पत्नी किस वंश की थी?
क) थेओफिलस, लेबी, ख) अबियस, लेबी
ग) अबियस, हारुन घ) हेरोद, एलियस

6) योहन को जब प्रभु की वाणी सुनाई पड़ी तब लुसानियस और हेरोद कहाँ के राजा थे?
क) इतूरैया, गलीलिया
ख) अबिलेने, गलीलिया
ग) यहूदिया, अबिलेने
घ) त्रेखोनितिस, यहूदिया

7) ईसा की वंशावली में किनका नाम नहीं है?
क) यारेत ख) सुलेमान ग) सेमेई घ) मनस्सेस

8) ज़करियस के मुख और जीभ के बन्धन कब खुले?
क) जब वह ईश्वर की स्तुति करने लगा।
ख) जब उसने अपने पुत्र का नाम पाटी पर लिखा।
ग)जब वह प्रभु के मन्दिर में धूप जला रहा था।
घ)जब उसके पुत्र का जन्म हुआ।

5) मारकुस रचित सुसमाचार
h) अध्याय 13-16

1) क) मारकुस15:39; 2) घ) 13:17
3) ख) 14:14,26;
4) ग) और घ) 16:17-18
5) क), ग) और घ) 13:7-8; 6) घ) 14:61;
7) क) 13:32; 8) क) 15:34, 42

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दु:खी व रोंगी.....हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद (सैक्टर-8, पुलिस थाने के निकट) में हर रविवार प्रात:9:30 बजे से1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"तुम्हारा प्रभु-ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर तथा प्रभुओं का प्रभु है। वह महान् शक्तिशाली तथा भीषण ईश्वर है। वह पक्षपात नहीं करता और घूस नहीं लेता।" (विधि-विवरण 10:17)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.